19

मन फिराव

कई बार हम परिस्थितियों को अपने आध्यात्मिक मूल्यों को निर्धारित करने की अनुमति दे देते हैं। लूका 16 में एक अविस्मरणीय दृश्य, जो अमीर आदमी और लाज़र के बारे में बताता है, में दर्शाया गया है कि यह कैसे सत्य है। इस जीवन में अमीर आदमी को किसी की परवाह नहीं थी और स्पष्टतया अपनी आत्मिक आवश्यकताओं की भी नहीं। उसकी दिलचस्पी अपनी स्वार्थी इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं की छोटी सी दुनिया तक ही सीमित थी। मृत्यु होने के बाद, वह उस सब का परिणाम भुगतने के लिए जो कुछ उसने किया था, अनन्तकाल में चला गया। वह विलासिता से कष्ट में आत्माओं के संसार में चला गया जिसे ''अधोलोक'' (हेडिस) कहते हैं (लूका 16:23)।

मृत्यु के पश्चात, उसकी प्राथमिकताएं बिल्कुल बदल गईं। अन्य सभी तर्क महत्वहीन हो गए। उसे अब दो महत्वपूर्ण विचारों ने ही घेरा हुआ था: पहला, वह अपने प्राण के प्रति दिलचस्पी लेने लगा (शायद पहली बार)। उसने अनुग्रह और कृपा के लिए विनती की। यीशु ने कहा, ''और उस ने पुकार कर कहा, 'हे पिता इब्राहीम, मुझ पर दया करके लाज़र को भेज दे ताकि वह अपनी अंगुली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ को ठण्डी करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूं' '' (लूका 16:24)।

दूसरा, उसके स्वर में अपने भाइयों की आत्मिक स्थिति के प्रति दिलचस्पी थी। अपने जीवन में शायद उसने पहली बार अपने भाइयों के लिए आत्मिक प्रेम को शब्दों में व्यक्त किया था। कष्ट के कुछ ही पलों ने उसे एक मिशनरी का हृदय दे दिया। उसने बिनती की:

तो हे पिता, मैं तुझ से बिनती करता हूं, कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज। क्योंकि मेरे पांच भाई हैं, वह उन के साक्ष्ने इन बातों की गवाही दे, ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा की जगह में आएं (लूका 16:27, 28)।

जब उसे बताया गया था कि उसके भाइयों को दूसरे लोगों की तरह व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं को पढ़ना चाहिए, तो उसने बिनती की, ''नहीं, हे पिता इब्राहीम, पर यदि कोई मरे हुओं में से उनके पास जाए, तो वे मन फिराएंगे'' (लूका 16:30)। क्या यह पहली बार था कि उसके द्वारा ''मन फिराना'' शब्द बोला गया? मृत्यु ने उसकी सोच और रुचियों को बदल दिया था! उसे पता चल गया था कि उसके भाइयों की आवश्यकता मन फिराव है जिससे वे बदल सकें!

समय और अनन्तकाल हमें कायल कर देंगे कि जीवन की सबसे बड़ी आवश्यकता मन फिराना ही है! ऐसा न हो कि हम मृत्यु तक इसकी प्रतीक्षा करते रहें कि हमें मजबूर करके इसका अहसास कराया जाए। यीशु ने कहा, ''मैं तुम से कहता हूं, कि नहीं; परन्तु यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम भी इसी रीति से नाश होगे'' (लूका 13:3,5)। पौलुस ने अथेने के वासियों में घोषणा करके मन फिराने की आज्ञा के सभी अपवादों को परे धकेल दिया: ''इसलिए परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है'' (प्रेरितों के काम 17:30)। मनुष्यजाति परमेश्वर के आगे दो मार्गों में से एक पर चलती है: या तो पश्चात्ताप के मार्ग पर या विद्रोह के मार्ग पर। यीशु के दोबारा आने में परमेश्वर एक कारण से देरी करता है- ताकि लोगों को मन फिराने के लिए और समय मिल जाए: ''प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कितने लोग समझते हैं; पर तुझ्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता कि कोई नाश हो; वरन यह कि सब को मन फिराने का अवसर मिले'' (2 पतरस 3:9)। हर एक मनुष्य का अन्तिम न्याय इस पर निर्भर है कि वह मन फिराता है या नहीं: ''पर डरपोकों और अविश्वासियों, और घिनौनों, और हत्यारों और व्यभिचारियों, और टोन्हों, और मूर्तिपूजकों, और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गंधक से जलती रहती है, यह दूसरी मृत्यु है'' (प्रकाशितवाक्य 21:8)।

कलीसिया उन लोगों से बनी है जिन्होंने मन फिराव की नये नियम की पुकार का उत्तर दिया है। मसीही वे लोग हैं जिन्होंने प्रभु का नाम लिया और अधर्म से अलग हो गए हैं (2 तीमुथियुस 2:19)। मसीह में मन परिवर्तन के द्वारा, उन्हें अन्धकार की

शक्ति से निकालकर, परमेश्वर के पुत्र के राज्य में लाया गया है (कुलुस्सियों 1:13)। उन्होंने उन पुरानी अभिलाषाओं की ओर मुड़ने से इन्कार करके जिनमें वे पहले अज्ञानता और आज्ञा न मानकर चलते थे, परमेश्वर की आज्ञाकारी संतान के रूप में जीने के लिए अपने आप को सौंप दिया है (1 पतरस 1:14)। उनकी इच्छा उसके जैसी होगी जिसने उन्हें बुलाया है। वे अपने सारे व्यवहार में यह मानते हुए कि उनका आचरण अपने प्रजु की इच्छा के अनुसार हो उसके जैसे बनने की धुन में हैं, ''पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूं'' (1 पतरस 1:16)।

इसलिए, मन फिराव, नींव के पत्थर सा शब्द है और किसी के लिए भी मसीही अर्थात प्रभु की कलीसिया का सदस्य बनने की चाह के लिए मुज़्य आचरण है। इस शब्द के मूल अर्थ और तात्पर्य में कलीसिया के स्वभाव की झलक मिलती है। मन फिराने का अर्थ उस प्रकार के लोगों से है जिन्हें परमेश्वर अपनी कलीसिया कहकर पुकारता है: कलीसिया पश्चात्ताप करने वालों से ही बनती है। जब पतरस ने यहूदी मसीहियों को यरूशलेम में कुरनेलियुस के घर हुए गैर यहूदियों के बपतिस्मे के बारे में बताया तो यहूदी भाइयों ने यह कह कर उत्तर दिया, ''तब तो परमेश्वर ने अन्य जातियों को भी जीवन के लिए मन फिराव का दान दिया है'' (देखिए प्रेरितों के काम 11:18)। उन्हें यह स्पष्ट हो गया था, और हमें भी यह स्पष्ट हो जाना चाहिए, कि सच्चे जीवन के द्वार सच्चे मन फिराव से ही खुलते हैं।

मन फिराना क्या है? आइए इस शब्द की और स्पष्ट रूप से परिभाषा दें ताकि यह गलतफहमी न रहे कि यह क्या है और इसका क्या अर्थ है। इसको चित्रित करने के लिए हम पौलुस के मन परिवर्तन की पृष्ठभूमि का इस्तेमाल करेंगे।

पाप से मुड़ना

पहला, मन फिराव बुराई की ओर से दिशा को बदलकर पाप से मुड़ना है।

मन फिराव व्यक्तिगत सुधार से, किसी के अपने जीवन को अच्छे ढंग से वश में रखने से अधिक है। यह एक दृढ़ निश्चय अर्थात उस सब को त्यागने का निर्णय है जो कि परमेश्वर से मेल नहीं रखता। यह निर्णय उस सारे परिवर्तन में योगदान देता है जिसे यीशु ने नया जन्म कहा (यूहन्ना 3:3)।

मन फिराव केवल खेद करना ही नहीं है कि मैंने पाप किया है। पाप के कारण आने वाली परेशानी या पाप के बदले मिलने वाले दण्ड के कारण कोई दुखी (उदास)

होकर कह सकता है कि मैंने पाप किया है। यहूदा को खेद हुआ कि उसने यीशु को पकड़वाया परन्तु उसने मन नहीं फिराया (मत्ती 27:3)। पतरस, जिसने मसीह का इन्कार किया था (मत्ती 26:34, 69-75), उसने मन फिराया; यहूदा केवल पछताया ही था। कोई बहुत अधिक व्याकुल हो सकता है कि उसने पाप किया, परन्तु मन नहीं फिराता।

मन फिराव केवल पाप को मान लेना नहीं है। पिन्तेकुस्त के दिन, पतरस का उन यहूदियों की ओर इशारा था जो उसे सुन रहे थे, उसके वचनों ने उन्हें उनके पाप के बारे में कायल कर दिया था, और वे पुकार उठे, ''हम क्या करें?'' (प्रेरितों के काम 2:37)। परन्तु, पतरस ने उनके द्वारा अपने पाप को मानने को मन फिराव नहीं माना; क्योंकि उनके इस प्रश्न के उत्तर में, उसने कहा, ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (प्रेरितों के काम 2:38)।

मन फिराव केवल परमेश्वर भक्ति का शोक नहीं है। पौलुस के अनुसार पहले पाप के प्रति परमेश्वर भक्ति का शोक होता है और वह मन फिराव को जन्म देता है:

> क्योंकि परमेश्वर भक्ति का शोक ऐसा पश्चात्ताप उत्पन्न करता है जिसका परिणाम उद्धार है, और फिर उससे पछताना नहीं पड़ता, परन्तु संसारी शोक मृत्यु उत्पन्न करता है (2 कुरिन्थियों 7:10)।

परमेश्वर भक्ति का शोक मन फिराव की प्रक्रिया का एक भाग है, परन्तु स्वयं मन फिराव नहीं है।

मन फिराने की परिभाषा जीवन सुधार के रूप में भी नहीं हो सकती। बल्कि इससे जीवन का सुधार उत्पन्न होता है। यदि मन फिराव परिवर्तित जीवन का फल नहीं है, तो यह वास्तविक मन फिराव नहीं है; परन्तु सुधरा हुआ जीवन अपने आप में मन फिराना नहीं है। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने अपने लोगों से आग्रह किया, ''सो मन फिराव के योग्य फल लाओ'' (मत्ती 3:8)। वास्तविक मन फिराव, मन फिराव के फलों के आगे, बदला हुआ जीवन है।

मन फिराव का सम्बन्ध पाप के बारे में किसी की इच्छा को पक्के तौर पर बदलना है। इसमें बुद्धि, भावनाएं, और विवेक शामिल हैं। मनुष्य के व्यक्तित्व में पाप के बारे में मन का बदलना इतना व्यापक है कि यह व्यक्ति को जीवन का एक मार्ग त्यागने के योग्य कर देता है। बपतिस्मे के समय, किसी के पुराने मनुष्यत्व को क्रूस पर चढ़ाकर,

पाप को आत्मिक मृत्यु में गाड़ा जा सकता है, ताकि पाप का शरीर नाश हो जाए (रोमियों 6:6)।

मन फिराव का यह अर्थ शाऊल के परिर्वतन में देखा जा सकता है। तरसुस का शाऊल एक फरीसी था, इब्रानियों का इब्रानी था (फिलिप्पियों 3:5)। मूसा की व्यवस्था के सम्बन्ध में, उसने कहा कि वह निर्दोष पाया गया था (फिलिप्पयों 3:6)। अन्य शब्दों में, उसके विरुद्ध व्यवस्था को पूरा करने में असफल होने का वैध दोष नहीं लगाया जा सकता था। एक फरीसी के रूप में, यहूदी धर्म में उच्च पदवी पर होते हुए शाऊल यह मानता था कि यीशु एक धोखेबाज़ था और उसका उद्देश्य यहूदी धर्म का नाश करना था। शाऊल को लगा कि उसे इस यीशु का नाश करने वाले सताव के साथ कड़ा विरोध करना चाहिए। वह किसी को भी जो यीशु के पीछे चलता था, अपना शत्रु मानता था। अथक और दृढ़ संकल्प के साथ, उसने मसीह की कलीसिया को समाप्त करने की ठान रखी थी।

कलीसिया को सताने के लिए निकलते हुए, शाऊल ने महायाजक से अनुमति मांगी (प्रेरितों के काम 9:1, 2)। जब उसे अपनी इच्छानुसार अधिकार मिल गया, तो वह अपनी इस योजना को सिरे चढ़ाने के लिए दमिश्क की ओर चल पड़ा। दमिश्क के मार्ग में, प्रभु यीशु ने उसे इतनी चमक में दर्शन दिया जो दोपहर के सूर्य से भी बढ़कर थी। प्रभु की उपस्थिति की रोशनी के कारण अन्धा हो चुका, शाऊल भूमि पर गिर पड़ा। जब शाऊल को भुइंडोल के समान इस सच्चाई का अहसास हुआ कि उसके साथ बात करने वाला यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र है, तो गहरे प्रायश्चित और पश्चात्ताप में उसने पूछा, ''हे प्रभु, मैं क्या करूं?'' (प्रेरितों के काम 22:10)। उसे दमिश्क में जाने का निर्देश दिया गया, जहां उसे बताया जाना था कि उसे क्या करना था (प्रेरितों के काम 9:6)। जब वह वहां पहुंचा, तो उसने तीन दिन तक उपवास और प्रार्थना करते हुए प्रतीक्षा की, जब तक हनन्याह उसके लिए प्रभु का उत्तर न लेकर आया। शाऊल ने मन फिराया। उसने अपने जीवन के मार्ग को बदलने का संकल्प कर लिया। उसका जीवन यहूदी धर्म के प्रति और मसीह की कलीसिया को सताने के लिए समर्पित था; जब उसने दमिश्क के उस मार्ग पर मन फिराया, तो उसके जीवन ने एक नई दिशा ले ली । वह अपने पुराने जीवन से एक क्रान्तिकारी परिवर्तन की इच्छा के साथ मुड़ा जिससे उसका सज्पूर्ण व्यक्तित्व बुद्धि, भावनाएं और विवेक प्रभावित हुए। बाद में, उसने कहा, ''जो-जो बातें मेरे लाभ की थीं, उन्हीं को मैंने मसीह के कारण हानि समझ लिया है'' (फिलिप्पियों 3:7)।

मसीही लोग वे हैं जो, शाऊल की तरह, पाप की ओर से मन फिराव की ओर मुड़े हैं। परमेश्वर के लोगों की जीवन शैली है कि वे हर प्रकार की बुराई से बचे रहते (1 थिस्सलुनीकियों 5:22), इस संसार के सदृश बनने से इन्कार करते (रोमियों 12:2), भलाई से बुराई को जीतते (रोमियों 12:21), और अपने विरुद्ध झूठे आरोपों का भले कामों से जवाब देते हैं (1 पतरस 2:12)।

पाप से मसीह की ओर मुड़ना

दूसरा, मन फिराव मसीह की ओर मुड़ना है। यह केवल बुराई के प्रति नकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं है; यह मसीह को सकारात्मक उत्तर भी है।

पौलुस ने थिस्सलुनीकियों की सराहना की क्योंकि मन फिराकर वे ''मूरतों से परमेश्वर की ओर फिरे ताकि जीवते और सच्चे परमेश्वर की सेवा करें'' (1 थिस्सलुनीकियों 1:9)। यदि कोई पाप से मुड़ा परन्तु परमेश्वर की ओर नहीं मुड़ा, तो उसने नये नियम के इस शब्द की पूर्ण भावना से मन फिराव नहीं किया।

नये नियम के प्रचार में मुज्य रूप से मसीह को महिमा दी गई है। सामरिया में फिलिप्पुस के प्रचार का लूका द्वारा वर्णित एक उदाहरण है कि आत्मा की प्रेरणा पाए हुए मनुष्यों ने कैसे प्रचार किया: ''फिलिप्पुस सामरिया नगर में जाकर लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा'' (प्रेरितों 8:5)। जब लोगों ने इस प्रकार के प्रचार का उत्तर दिया तो उन्होंने सुसमाचार संदेश को ग्रहण कर पाप को छोड़ दिया और मसीह को पा लिया। इफिसुस में पौलुस के प्रचार के बाद, मन फिराव के दोनों पहलू स्पष्ट थे। लूका ने कहा:

> और उन सब पर भय छा गया; और प्रभु यीशु के नाम की बड़ाई हुई। और जिन्होंने विश्वास किया था, उनमें से बहुतेरों ने आकर अपने-अपने कामों को मान लिया और प्रकट किया, और जादू करने वालों में से बहुतों ने अपनी-अपनी पोथियां इकट्ठी करके सब के साम्हने जला दीं (प्रेरितों 19:17ख-19क)।

मन फिराने वाले इफिसियों ने मसीह को ग्रहण कर लिया और अपने पाप भरे जीवनों को छोड़ दिया।

शाऊल का मन फिराव पाप को छोड़कर मसीह की ओर मुड़ना था। जब शाऊल

दमिश्क को निकला तो वह मसीहियों को सताने के लिए ही जा रहा था। मूसा की व्यवस्था के अधीन रहते हुए, वह नैतिक और औपचारिक शिष्टाचार युक्त अपराध से मुक्त था। किसी भी अर्थ में वह दुष्ट उड़ाऊ नहीं था। इसलिए उसके मन फिराव से, परमेश्वर को प्रसन्न करने की उसकी भीतरी इच्छा प्रभावित नहीं हुई; उसकी यह इच्छा उसके यौवनकाल से ही थी, और मूसा की व्यवस्था का निष्ठा से पालन कर उसने इसे प्रकट किया था। फिर भी, उसका मसीहियों को सताना, एक भयंकर पाप था। फलस्वरूप, परमेश्वर के सामने उसके मन फिराव के कारण उसने अपने पूर्व विश्वास को कि परमेश्वर की सेवा के लिए मसीहियों को सताना और मसीह की निन्दा करना आवश्यक है, को नकार दिया। इसके लिए मसीह की ओर मुड़ना, उसे प्रभु मानना, और उसकी इच्छा के आगे विनम्रता से झुक जाना आवश्यक था।

पौलुस ने स्वयं फिलिप्पियों 3:8-11 में अपने मन फिराव के बारे में बताया:

> ... मैं अपने प्रभु मसीह यीशु की पहचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूं: जिस के कारण मैंने सब वस्तुओं की हानि उठाई, और उन्हें कूड़ा समझता हूं, जिससे मैं मसीह को प्राप्त करूं। और उस में पाया जाऊं; न कि अपनी उस धार्मिकता के साथ, जो व्यवस्था से है, वरन् उस धार्मिकता के साथ जो मसीह पर विश्वास करने के कारण है, और परमेश्वर की ओर से विश्वास करने पर मिलती है। और मैं उसको और उसके मृत्युन्जय की सामर्थ को, और उसके साथ दुखों में सहभागी होने के मर्म को जानूं, और उस की मृत्यु की समानता को प्राप्त करूं। ताकि मैं किसी भी रीति से मरे हुओं में से जी उठने के पद तक पहुंचूं।

इसलिए, शाऊल पाप से मसीह की ओर मुड़ गया। उसके लिए मन फिराव नकारात्मक भी था और सकारात्मक भी, जीवन के अपने पुराने मार्ग से मुड़ना और मसीह में जीवन के नये और उत्तम मार्ग की ओर मुड़ जाना।

कलीसिया में पश्चात्तापी लोग हैं जो मसीह की देह बनकर, मसीह के समर्पण में जीवन बिताते हैं। इसके सदस्य मसीह के साथ एक हो गए हैं। मन फिराव से, एक मसीही ने पवित्रता और धार्मिकता में प्रवेश किया है। वह मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया है, और अपने नये जीवन में, जो उसके मन फिराने के परिणामस्वरूप मिला है, वह परमेश्वर के पुत्र में विश्वास से जीवित है (गलतियों 2:20)। परमेश्वर के प्रायश्चित करने वाले लोग होकर मसीही लोग मसीह का नाम पहनते हैं, मसीह को

महिमा देते हैं, और इस पूर्वाभास के द्वारा उसके आने पर या मृत्यु के समय वे उसके और भी निकट होंगे, वे धर्मी होने को विवश हैं।

पाप से मसीह की ओर जीवन के लिए मुड़ना

तीसरा, मन फिराव पाप से जीवन के लिए मसीह की ओर मुड़ना है। यीशु ने किसी को भी धार्मिक छुट्टी लेने के लिए, बुराई से थोड़े समय के लिए नहीं बुलाया था। उसने पूरी तरह से समर्पण के लिए कहा, जिसे उसने जल और आत्मा से जन्म लेना कहा अर्थात वह जन्म जो ऊपर से होता है (यूहन्ना 3:5)। यह रूपान्तरण इतना क्रान्तिक और टिकाऊ है कि पौलुस ने इसकी तुलना आत्मिक खतने से की, जो कि परमेश्वर की करनी के द्वारा मांस की देह का पूरी तरह से उतारा जाना है:

> उसी में तुम्हारा ऐसा खतना हुआ है जो हाथ से नहीं होता, अर्थात मसीह का खतना, जिस से शारीरिक देह उतार दी जाती है (कुलुस्सियों 2:11)।

पौलुस ने कहा कि मन परिवर्तन का अर्थ है पुराने स्वभाव को फेंक देना और नए स्वभाव को पहन लेना, जैसे कोई जीर्ण, गन्दे, फटे-पुराने कपड़ों को उतार कर इस संकल्प के साथ एक तरफ रख देता है कि उनको फिर कभी नहीं पहनना है (इफिसियों 4:24; कुलुस्सियों 3:10)। परमेश्वर हमें पाप और मृत्यु से उठाता है और मसीह में हमें जीवन देता है जब हम मसीह के लहू के द्वारा छुड़ाए जाते हैं (कुलस्सियों 2:13)।

मन फिराव में चलता रहने वाला एक सकंल्प शामिल है। परमेश्वर को उत्तर देने में, हमें शरीर के कामों को मार देना है। अत: मसीही होने के कारण हमारे ज़िम्मे एक उद्देश्य है कि हम इन कामों को हमेशा दबाए रखें। पौलुस ने कहा, ''इसलिए अपने उन अंगों को मार डालो, जो पृथ्वी पर हैं, अर्थात व्यभिचार, अशुद्धता, दुष्कामना, बुरी लालसा और लोभ को जो मूर्ति पूजा के बराबर हैं'' (कुलुस्सियों 3:5)। उसने यह भी कहा:

> पर अब तुम भी इन सब को अर्थात क्रोध, रोष, वैरभाव, निन्दा और मुंह से गालियां बकना ये सब बातें छोड़ दो। एक दूसरे से झूठ मत बोलो क्योंकि तुम ने पुराने मनुष्यत्व को उसके सब कामों समेत उतार डाला है (कुलुस्सियों 3:8, 9)।

पौलुस ने एक बार के त्याग, जब मृत्यु हुई, और लगातार त्याग के बारे में लिखा, जो कि चलता रहने वाला मनफिराव है।

मन फिराव के इस अर्थ के और स्पष्ट चित्र के लिए हम शाऊल के मन परिवर्तन के अतिरिक्त और कहां जा सकते हैं? किसी ने कहा है, ''हमने अज़ी नहीं देखा कि परमेश्वर उस एक व्यक्तिय के साथ क्या कर सकता है जो पूरी तरह से उसमें परिवर्तित हो जाता है।'' यदि हमने नहीं देखा, तो हम शाऊल के जीवन में इसके बहुत निकट आ सकते हैं। शाऊल के मन परिवर्तन के फलस्वरूप संसार में इसका प्रभाव दो हज़ार वर्षों से अनुभव किया जाता है। मसीह के पीछे चलने का उसका निर्णय अन्तिम और अपरिवर्तनीय है। उसने अपना जीवन क्रूस के चरणों में सेवा और उस भलाई के लिए रख दिया जो मसीह उससे निकाल सकता था।

सिकन्दर महान जब एक महायुद्ध के लिए अपनी सेना को तट पर लाया, तो कहते हैं कि उसने आज्ञा दी कि जब जहाज़ खाली किए जाएं तो उनमें आग लगा दी जाए। सिकन्दर पीछे हटने की सज़्भावना की बात सोच भी नहीं सकता था। उसके या उसके लोगों के लिए पीछे मुड़ना नामुमकिन था। उनका जो भी भविष्य था वह सीधा आगे था, पीछे नहीं। शाऊल के लिए भी ऐसा ही था। उसने अपने दिल में किसी भी प्रकार का संदेह या पीछे हटने की सज़्भावना के लिए जगह नहीं रखी थी।

परमेश्वर के लोगों अर्थात कलीसिया ने, एक प्रतिज्ञा की है- यह इतनी सशक्त है कि इसे कायापलट या मृत्यु से पार होकर जीवन में पहुंचना कहा जा सकता है (1 यूहन्ना 3:14)। उन्होंने जीवनभर के लिए मसीह में नए मनुष्य को पहन लिया है। यह पहनना तो, मसीह में उनके मन परिवर्तन के समय हुआ, परन्तु हृदय को निरन्तर शुद्ध रखना उनका कर्तव्य है (रोमियों 6:2ख)। पुराने मनुष्य की मृत्यु हो चुकी है, परन्तु यदि जी उठने का कोई अवसर मिले तो वह फिर से ज़िन्दा होने की कोशिश करेगा (रोमियों 6:12, 13)। एक मसीही को मूर्खता से नहीं, बल्कि बुद्धि से सावधान होकर चलना चाहिए (इफिसियों 5:17)। वह अन्धेरे के निष्फल कामों में सहयोगी नहीं होता, बल्कि उन्हें प्रकट करता है (इफिसियों 5:11)। वह मर चुका है, और उसका जीवन परमेश्वर में मसीह के साथ छिपा हुआ है (कुलुस्सियों 3:3)। एक मसीही ने अपने आपको मृतकों में से जी उठने के समान, और उसके समान जिसने अपनी देह को धार्मिकता के लिए अर्पित कर दिया है, परमेश्वर के आगे सौंप दिया है (रोमियों 6:13)।

सारांश

हर एक ज़िम्मेदार व्यक्ति के लिए परमेश्वर के आगे मन फिराना और मन फिराने के योग्य जीवन जीना आवश्यक है। मन फिराना पूरी तरह से इच्छा का बदलना अर्थात पाप से जीवन के लिए मसीह की ओर मुड़ना है। यह पाप सिद्ध होने, परमेश्वर भक्ति के शोक, और परमेश्वर की दयालुता से होता है। इसके परिणाम में कायापलट होती है जो जीवन में एक नए व्यक्ति को लाती है जो परमेश्वर में मसीह के साथ छिपा है।

कलीसिया नये लोगों का एक समाज है। वे सम्पूर्ण नहीं हैं, परन्तु वे शुद्धता, भक्तिपूर्ण जीवन, और धार्मिकता का पीछा करते हैं। जीवनभर के लिए वे वचनबद्ध हैं कि प्रभु की सेवा में आदर के बर्तन बने रहना है।

पवित्र शास्त्र में मन फिराव के तीन प्रेरकों को बड़ी आसानी से पहचाना जा सकता है। पहला, पौलुस ने कहा कि परमेश्वर की दयालुता मन फिराव की ओर ले जाती है: ''क्या तू उसकी कृपा, और सहनशीलता, और धीरज रूपी धन को तुच्छ जानता है? और क्या यह नहीं समझता, कि परमेश्वर की कृपा तुझे मन फिराव को सिखाती है?'' (रोमियों 2:4)। दूसरा, पतरस ने पुरस्कार के वायदे की बात का उल्लेख किया ''इसलिए, मन फिराओ और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाए जाएं, जिस से प्रभु के सम्मुख से विश्रान्ति के दिन आएं'' (प्रेरितों 3:19)। तीसरा, यूहन्ना ने दण्ड के भय की ओर संकेत किया:

> उन दिनों में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला आकर यहूदिया के जंगल में यह प्रचार करने लगा कि, ''मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है... कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर रखा हुआ है, इसलिए जो-जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में झोंका जाता है'' (मत्ती 3:1-10)।

मन फिराना अपने आप में और परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए पर्याप्त नहीं है, परन्तु मन फिराने से हमारे अन्दर समर्पण की आत्मा का जन्म होता है। ऐसी आत्मा हमें परमेश्वर की सभी आज्ञाओं को मानने के लिए विवश करती है जिन्हें उसने मसीह में हमारे आने के लिए ठहराया है। यह किसी के जीवन को परमेश्वर की इच्छा के लिए खोल देती है।

कहते हैं कि हमारे उद्धारकर्त्ता की अन्तिम बात महान आज्ञा (ग्रेट कमीशन)

नहीं बल्कि एशिया की सात में से पांच कलीसियाओं को मन फिराव के लिए उसकी पुकार थी (प्रकाशितवाक्य 1-3)। यदि आपने मन नहीं फिराया और परमेश्वर के पश्चात्तापी लोग बनकर मसीह की देह में नहीं आये तो इससे बढ़कर आपकी और कोई आवश्यकता नहीं है। यदि आप एक मसीही हैं व मसीह में एक नया मनुष्य बनकर जी रहे हैं, तो आपका सर्वोच्च कर्तव्य उस वायदे को निभाना है जो आपने किया है।

अध्ययन के लिए प्रश्न

(उत्तर पृष्ठ 244 पर)

1. मृत्यु ने धनी व्यक्ति की सोच को कैसे बदला?
2. किस प्रकार एक मसीही बनने की चाह रखने वाले के लिए ''मन फिराव'' शब्द आधारशिला और मुज़्य गुण है?
3. मन फिराना पाप के पछतावे से बढ़कर क्यों है?
4. वर्णन करें कि मन फिराना केवल ईश्वर भक्ति का शोक क्यों नहीं है।
5. शाऊल के मन परिवर्तन में मन फिराव को कैसे देखा जा सकता है?
6. पौलुस ने थिस्सलुनीकियों की प्रशंसा क्यों की?
7. मन फिराना पापों के अंगीकार से बढ़कर क्यों है?
8. पवित्र शास्त्र के अनुसार मन फिराव के लिए तीन प्रेरक कौन से हैं?

अतिरिक्त बाइबल अध्ययन के लिए मार्ग-दर्शन

किसे मन फिराना चाहिए? - 2 पतरस 3:9; प्रेरितों के काम 17:30, 31; लूका 13:3।

नये नियम में मन फिराव का उदाहरण- उड़ाऊ पुत्र (लूका 15:11-24); जक्कई (लूका 19:2-8)।

मन फिराने का दाम - मत्ती 10:34, 39; लूका 12:51-53।

मन-परिवर्तन के उदाहरण - प्रेरितों 2:36-47; 8:5, 6, 12, 18-22, 26-39; 9:1-18; 10:1-48; 16:13-15, 25-34; 19:1-5।

मसीही प्रभाव - मत्ती 5:13-16; 1 कुरिन्थियों 15:33।

यीशु ने सब लोगों के लिए अपना लोहू बहाया – उद्धार आज्ञा मानने वालों के लिए है (इब्रानियों 9:11–14); पापों को दूर करने के लिए बैलों और बकरों का लोहू अपर्याप्त है (इब्रानियों 10:4); उसके लोहू ने हमें छुटकारा दिलाया है (1 पतरस 1:18, 19); यीशु ने हर एक के लिए मृत्यु का स्वाद चखा (इब्रानियों 2:9)।

जब हम क्रूस की ओर देखते हैं तो हमें पता चलता है – कि हमें एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है (रोमियों 3:23; 5:12); परमेश्वर हमसे कितना प्रेम करता है (यूहन्ना 3:16); कि मसीह लोगों से प्रेम करता है चाहे वे पापी ही हैं (रोमियों 5:8, 9); कि उद्धार परमेश्वर की ओर से दान है (इफिसियों 2:8–10)।

बपतिस्मे के द्वारा यीशु के लहू के स पर्क में आने पर क्रूस पर उसकी मृत्यु हमें बचाती है – हम बपतिस्मे में उसके साथ गाड़े जाते हैं (रोमियों 6:3, 4); बपतिस्मा बचाता है (1 पतरस 3:21)।

सुसमाचार की आज्ञा मानने के बाद आप एक मसीही बनकर कैसे जी सकते हैं?

1. *आत्मिक उन्नति के लिए अति समर्पित हों।* बढ़ने की हर कोशिश करें (2 पतरस 1:1–10)। बढ़ने के लिए योजना बनाएं (फिलिप्पियों 3:7–15)।
2. *बाइबल अध्ययन करें,* वचन को सही रीति से काम में लाएं (2 तीमुथियुस 3:15)। ज्ञान में बढ़ें (2 पतरस 3:18)। पवित्र शास्त्र का अध्ययन प्रतिदिन करें (प्रेरितों 17:11)। वचन को नम्रता से ग्रहण करें, और इसकी आज्ञा मानें (याकूब 1:21–25)।
3. *अपने जीवन में मसीही शालीनताओं को जोड़ें।* विश्वास, सद्‌गुण, समझ, संयम, धीरज, भक्ति, भाईचारे की प्रीति, और प्रेम को जोड़ते जाएं (2 पतरस 1:5–7)।
4. *लगातार प्रार्थना करें।* बुद्धि के लिए प्रार्थना करें (याकूब 1:5, 6)। निरन्तर प्रार्थना करें (1 थिस्सलुनीकियों 5:17)।
5. *लगातार आराधना करें। (स भव हो तो, अन्य मसीहियों के साथ)।* इकट्ठे होना न छोड़ें (इब्रानियों 10:25)। यदि आपके क्षेत्र में या निकट कोई कलीसिया नहीं है तो आप अपने घर में इसे आरम्भ कर सकते हैं (देखिए पृष्ठ 248 पर)। आत्मा और सच्चाई से आराधना करें (यूहन्ना 4:24)।

6. *यीशु के बारे में औरों को बताएं।* जिस किसी को भी आप बता सकें, उसे बताएं (मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15, 16)। इस पुस्तक के बारे में अपने मित्रों से बात करें, और मसीही बनने में उनकी सहायता करें।
7. *भले काम करें।* जिन्हें यीशु ने उद्धार दिलाया है उन्हें भले कामों के लिए सृजा गया है (इफिसियों 2:10)।